Jaanvaron Ke Baare Mein Dilchasp Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 203
Weekly Booklet : 203

जानवरों के बारे में दिलचस्प सुवाल जवाब

सफ़हात 20

- क्या बकरियां पालना सुन्नत है ? 03
- बच्चा पैदा होते ही बेच देना कैसा ? 06
- जान का सदक़ा किस चीज़ से दिया जाए ? 07
- कुत्तों की लड़ाई करवाना कैसा ? 16

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **"जानवरों के बारे में दिलचस्प सुवाल जवाब"** मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए सुवालात और उन के जवाबात पर मुश्तमिल है।

जानवरों के बारे में दिलचस्प सुवाल जवाब

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला "**जानवरों के बारे में दिलचस्प सुवाल जवाब**" पढ़ या सुन ले उसे जानवरों पर रह़्म करने वाला दिल अ़त़ा फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे।
اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

किसी बुज़ुर्ग ने एक शख़्स को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : **अल्लाह** पाक ने मुझे बख़्श दिया। पूछा : किस सबब से ? बोला : मैं एक मुह़द्दिस साहिब (या'नी ह़दीस शरीफ़ का इ़ल्म जानने वाले) के यहां ह़दीसे पाक लिखा करता था, उन्हों ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा तो मैं ने बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक पढ़ा नीज़ ह़ाज़िरीन ने सुना तो उन्हों ने भी दुरूदे पाक पढ़ा तो **अल्लाह** पाक ने इस की बरकत से हम सब को बख़्श दिया है।

(القول البدیع، ص254)

आ'माल न देखे येह देखा महबूब के कूचे का है गदा
मौला ने मुझे यूं बख़्श दिया سُبْحٰنَ اللّٰه سُبْحٰنَ اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

शैख़ उ़स्मान ह़ीरी और ज़ख़्मी गधा (ह़िकायत)

ह़ज़रते शैख़ उ़स्मान ह़ीरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक खाते पीते और मालदार घराने से तअ़ल्लुक़ रखते थे। एक मरतबा आप अपनी रेशमी चादर ओढ़ कर मद्रसे जा रहे थे, ह़ालां कि रेशमी चादर मर्द इस्ति'माल नहीं कर सकता, लेकिन येह आप की तौबा से पहले का वाक़िआ़ है। (रास्ते में) आप को एक गधा नज़र आया जिस की पीठ ज़ख़्मी थी और कव्वे उस ज़ख़्म पर चोंचें मार रहे थे, आप को बड़ा रह़्म आया और आप ने अपनी रेशमी चादर उतार कर गधे की पीठ के ज़ख़्मी ह़िस्से पर बिछा दी, यूं गधे को कव्वों से नजात मिल गई, उस गधे ने इन की त़रफ़ देखा और ग़ालिबन दुआ़ दी, अगर्चे वोह दुआ़ सुनने में नहीं आई, लेकिन उस से ह़ज़रते शैख़ उ़स्मान ह़ीरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की तक़्दीर बदल गई और आप बहुत बड़े बुज़ुर्ग बन कर **अल्लाह** के नेक बन्दों में शुमार होने लगे। (تذکرۃ الاولیاء، ذکر ابو عثمان حیری، 2/47 ماخوذا)

जानवर की मदद करने पर अज्र

सुवाल : क्या जानवर की मदद करने पर अज्र मिलता है ?

जवाब : जी हां ! ह़दीसे पाक में तज़्किरा है कि "एक बहुत ही गुनाहगार शख़्स था, वोह कूंएं के पास से गुज़रा, उस ने देखा कि एक कुत्ता गीली मिट्टी चाट रहा है, उस की बाहर निकली हुई ज़बान देख कर उस शख़्स को अन्दाज़ा हुवा कि येह कुत्ता बहुत प्यासा है, उस ने अपना मोज़ा उतारा, मोज़े में पानी भर कर पानी निकाला और उस कुत्ते को पिला दिया। **अल्लाह** करीम को उस की येह नेकी पसन्द आ गई और उस की बख़्शिश हो गई।"

(بخاری، 4/103، حدیث: 6009 ماخوذا)

जानवरों पर रह़्म करना और उन की मदद करना बड़े सवाब का काम है। बा'ज़ बच्चे बिल्ली को छत से गिरा देते हैं, मारते हैं और दुम से

उठा कर फेंक देते हैं। उन्हें समझाना चाहिये, क्यूं कि वोह ना समझी में ऐसा करते हैं। जानवर चाहे बिल्ली हो या कुत्ता हो, **अल्लाह** पाक की मख़्लूक़ है, उसे बिला वज्ह ईज़ा नहीं देनी चाहिये क्यूं कि येह गुनाह है। ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने लिखा है कि "मज़्लूम जानवर और मज़्लूम काफ़िर की बद दुआ़ भी मक़्बूल है।"

(मिरआतुल मनाजीह़, 3/300)

इस्लाम ने ज़ुल्म का रद किया है, इस्लाम में ज़ुल्म है ही नहीं। हमें प्यार मह़ब्बत देनी है और ज़ुल्म से बचना है। जानवरों पर रह़्म खाते हुए उन्हें खिलाना पिलाना चाहिये क्यूं कि ह़दीसे पाक में है कि "हर तर जिगर वाली जान में अज्र है।" (بخاری، 4/103، حدیث:6009ملتقطا) हम जानवर के साथ एह़सान व भलाई करेंगे तो सवाब मिलेगा।

क्या बकरियां पालना सुन्नत है ?

सुवाल : क्या बकरियां पालना सुन्नत है ? (Facebook के ज़रीए सुवाल)

जवाब : जी हां ! सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बकरियां ह़ाज़िर रहती थीं, बल्कि मख़्सूस दूध पिलाने वाली बकरियां भी थीं। (عمدۃ القاری، 15/539، تحت الحدیث:6459ملخصا) एक रिवायत है कि घर में बकरी का होना मोह़ताजी के 70 दरवाज़े बन्द कर देता है। (فردوس الاخبار، 2/12، حدیث:3471) या'नी घर में बकरी रखना इतना मुफ़ीद है। घर से मुराद (Bedroom) (या'नी सोने का कमरा) तो हो नहीं सकता, इस से मुराद घर की वोह मुनासिब जगह है जहां बकरी रखी जा सकती हो।

जानवर बेच कर मीलाद का लंगर करना कैसा ?

सुवाल : अगर किसी ने मीलाद के लंगर के लिये जानवर पाला हो तो क्या वोह उस जानवर को बेच कर आधी रक़म इस साल और बक़िय्या आधी

रक़म अगले साल मीलाद के लंगर में ख़र्च कर सकता है ?

(मुहम्मद इमरान अ़त्तारी)

जवाब : अगर इसी साल जानवर क़ुरबान करने की निय्यत की थी तो इसी साल कर लेना चाहिये। लेकिन चूंकि ऐसा करना उस पर वाजिब नहीं हुवा था। (फ़तावा रज़विय्या, 13/589 माख़ूज़न) इस लिये अगर जानवर बेच कर आधी आधी रक़म से भी मीलाद का लंगर करता है तब भी सह़ीह़ है। अगर बिलफ़र्ज़ इरादा बदल दे और लंगर ही न करे तब भी गुनाहगार नहीं है, लेकिन जब निय्यत की है तो इस से पीछे नहीं हटना चाहिये।

क्या भूलना भी अल्लाह की ने'मत है ?

सुवाल : ''भूल **अल्लाह** की ने'मत है'' ऐसा कहना कैसा ?

जवाब : बहुत सी सूरतें ऐसी हैं जिन में भूल जाना ने'मत है, जैसे किसी ने हमारे साथ बद सुलूकी की और हम भूल गए तो येह ने'मत हुई, क्यूं कि अगर बद सुलूकी याद रह जाती तो उस से ख़ार खाते रहते, उस की बुराइयां करते रहते और उस से इन्तिक़ाम लेने की टोह में रहते कि जब मौक़अ़ मिलेगा, नहीं छोड़ूंगा। बा'ज़ अवक़ात बच्चों को डांट डपट करते हुए न जाने क्या क्या बोल देते हैं और बच्चे भूल जाते हैं, येह भूलना भी ने'मत है, वरना अगर बच्चा न भूले और वोह भी ख़ारबाज़ी करे तो मां बाप को पूरा कर दे। जानवर का ह़ाफ़िज़ा भी बहुत कमज़ोर होता है, जब बकरा बंधा हुवा था तो बकरे को डन्डा मारा था, अगर वोह याद रखे और भूले नहीं तो जब येह खुलेगा और डन्डे का बदला सींग से लेगा तो कैसा लगेगा !! ऐसी और भी सूरतें हैं जिन में बन्दा भूल जाता है तो फ़ाएदा होता है। तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़दीसे पाक मौजूद है कि ''ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام भूल

कर दरख़्त से खा गए, लिहाज़ा इन की औलाद भूलने लगी ।" (ترمذی، 5/53، حدیث:3087) इस ह़दीसे मुबारका की शर्ह़ मिरआतुल मनाजीह़ में कुछ इस त़रह़ है : "या'नी आदम عَلَيْهِ السَّلَام से दरख़्त की ता'यीन में इज्तिहादी ख़त़ा हुई और वोह समझे कि रब ने ख़ास उस दरख़्त के फल से मन्अ़ फ़रमाया है और मैं दूसरे दरख़्त से फल खा रहा हूं, ह़ालां कि मुमानअ़त जिन्से दरख़्त से थी, या वोह समझे कि मुझे खाने से मन्अ़ नहीं किया गया, बल्कि क़रीब जाने से मन्अ़ किया है। वोही ख़त़ा और निस्यान आज तक इन्सानों में चली आ रही है।" (मिरआतुल मनाजीह़, 1/117, 119)

क्या ह़राम जानवर का नाम लेने से 40 दिन तक नमाज़ क़बूल नहीं होती ?

सुवाल : क्या ह़राम जानवर का नाम लेने से 40 दिन तक नमाज़ क़बूल नहीं होती ? (सोशल मीडिया के ज़रीए़ सुवाल)

जवाब : ह़राम जानवर तो कुत्ता और बिल्ली भी हैं, लेकिन एक मख़्सूस जानवर है जिस के मुतअ़ल्लिक़ लोगों में अफ़्वाह फैली हुई है और शायद इसी वज्ह से साइल ने भी उस ह़राम जानवर का नाम नहीं लिया, ह़ालां कि उस जानवर का नाम क़ुरआने करीम में भी आया है और वोह ह़राम जानवर "ख़िन्ज़ीर" है। (इस मौक़अ़ पर मुफ़्ती ह़स्सान साह़िब ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :) ﴿اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ﴾ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** उस ने येही तुम पर ह़राम किये हैं मुर्दार और ख़ून और सुअर का गोश्त) (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया :) अ़वाम में बहुत सारी ग़लत़ फ़ह्मियां पाई जाती हैं। ख़िन्ज़ीर का लफ़्ज़ कहने से न वुज़ू टूटता है और न ही गुनाह मिलता है।

पिंजरों में तोते पालना कैसा ?

सुवाल : परिन्दों को नफ़्ली सदक़े की निय्यत से दाना वग़ैरा डाला जाए तो क्या नफ़्ली सदक़े का सवाब मिलेगा ? नीज़ अगर किसी ने पिंजरे में शौक़िया तोते पाले हों, लेकिन उन का ख़याल रखता हो तो क्या उसे तोते क़ैद रखने का गुनाह मिलेगा ?

जवाब : परिन्दों को दाना खिलाना सवाब का काम है। अगर किसी ने तोतों को क़ैद रखा है, लेकिन उन को बार बार दाना पानी देता है और कोई तक्लीफ़ नहीं देता तो येह बन्द रखना जाइज़ है, मगर इस में बन्दे को येह सोचना चाहिये कि अगर कोई मुझे बन्द कर दे तो कैसा लगेगा ? हमें तो छोटा मोटा मकान काफ़ी होता है, लेकिन परिन्दों के लिये बहुत बड़ी फ़ज़ा चाहिये। जैसे छोटी मछलियां शोपीस के तौर पर लोग रखते हैं तो मुझे बड़ा रहूम आता है, क्यूं कि पानी कांच के शोपीस में होता है जिस की वज्ह से हो सकता है कि बा'ज़ अवक़ात तैरते हुए मछलियां टक्राती हों और ज़ख़्मी हो जाती हों। येह समझती होंगी कि रास्ता है और टक्रा जाती होंगी। मैं ना जाइज़ नहीं कह रहा, लेकिन समझ येही आता है कि ऐसे शौक़ न पाले जाएं जिन से किसी जानवर को हमारी वज्ह से परेशानी का सामना हो। बा'ज़ अवक़ात लोग बड़ा अच्छा काम करते हैं कि चिड़ियां वग़ैरा ख़रीद कर आज़ाद करते हैं, येह अच्छा काम है।

बच्चा पैदा होते ही बेच देना कैसा ?

सुवाल : मेरा (Farming) का छोटा सा काम है। जब भैंस बच्चा देती है तो कई (Farmer) हज़रात उसे फ़रोख़्त (Sale) कर देते हैं, हालां कि अभी उस बच्चे ने अपनी मां का पहला दूध भी नहीं पिया होता। ऐसा करना कैसा है ? (अ़ली अहमद)

जवाब : आ़म तौ़र पर छोटा बच्चा जो नर हो वोह (Sale) इस लिये कर दिया जाता है कि वोह बड़ा हो कर न दूध देगा और न ही बच्चे देगा। येह बेचना जाइज़ है। अलबत्ता बा'ज़ लोग ऐसे जानवर पर रह़्म खाते हैं, येही वज्ह है कि ऐसे जानवर के बेचने से थोड़ी बहुत तन्फ़ीर की सूरत बनती है। लेकिन ऐसे लोगों की भी एक ता'दाद है जो इसी त़रह़ के जानवर का गोश्त खाना पसन्द करती है, क्यूं कि उस का गोश्त ह़ल्वान (नर्म) और बिल्कुल मुलायम होता है। मुजरिमाना ज़ेह्न के बा'ज़ होटल चलाने वाले लोग ऐसे जानवर की चांपें बना कर बकरे की जगह उसे चला देते हैं, क्यूं कि चांप जब भून ली जाए तो पता नहीं चलता कि बकरे की है या छोटे बच्चे की है, येह तो सरासर धोका है। क़ुरबानी में अगर जानवर के पेट से बच्चा ज़िन्दा निकल आए तो उसे भी ज़ब्ह़ किया जाएगा और अगर मुर्दा निकले तो फेंक दिया जाएगा। (बहारे शरीअ़त, 3/348, ह़िस्सा : 15) जिस जानवर से मुर्दा बच्चा निकला उस का गोश्त पाक होगा और खाना भी जाइज़ होगा।

जान का सदक़ा किस चीज़ से दिया जाए ?

सुवाल : सदक़ा किस त़रह़ किया जाए जिस से बीमारी दूर हो जाए ?

(एक इस्लामी बहन का सोशल मीडिया के ज़रीए सुवाल)

जवाब : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने लिखा है कि जान का सदक़ा जानवर जैसे बकरा या मुर्ग़ी वग़ैरा ज़ब्ह़ कर के देना बेहतर है। चुनान्चे फ़तावा रज़विय्या में है : "शीरीनी (या'नी मीठी चीज़) या खाना फ़ुक़रा को खिलाएं तो सदक़ा है और अक़ारिब को (या'नी रिश्तेदारों को खिलाएं) तो सिलए रेह़्म (या'नी रिश्तेदारों से अच्छा बरताव है) और अह़बाब को (या'नी दोस्तों को खिलाएं) तो ज़ियाफ़त (या'नी दा'वत है)। और येह

तीनों बातें (या'नी सदक़ा, सिलए रेहूम और ज़ियाफ़त) मूजिबे नुज़ूले रह़मत (या'नी रह़मत नाज़िल होने) व दफ़्ए़ बला व मुसीबत (या'नी बलाएं और मुसीबतें दूर होने का सबब) हैं। (मज़ीद फ़रमाते हैं :) येही ह़ाल बकरी ज़ब्ह़ कर के खिलाने का है। मगर तजरिबे से साबित हुवा है कि जान का सदक़ा देना ज़ियादा नफ़्अ़ रखता है (या'नी बकरी ज़ब्ह़ कर के खिलाएं तो ज़ियादा फ़ाएदा होता है और बलाएं तेज़ी से जाती हैं)।" (फ़तावा रज़विय्या, 24/185, 186 मुल्तक़त़न) अलबत्ता येह ज़रूरी नहीं कि ख़ुद मरीज़ ज़ब्ह़ करे, बल्कि जिसे जानवर दिया उस से भी कहा जा सकता है कि वोह जानवर को ज़ब्ह़ कर दे।

जानवरों पर ज़ुल्म करना क़ियामत के दिन सख़्त आज़्माइश का बाइ़स बन सकता है !

सुवाल : बा'ज़ लोग जानवरों पर बे इन्तिहा ज़ुल्म कर रहे होते हैं, उन के ह़वाले से कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : जी हां बा'ज़ लोग जानवरों पर बे जा सख़्ती करते उन को मारते और झाड़ते रहते हैं जैसे घोड़ागाड़ी या गधागाड़ी चलाने वाले उन मज़्लूम जानवरों को बिला वज्ह चाबुक मारते रहते हैं और बेचारे गधे पर तो बहुत ज़ुल्म करते हैं उस की रान के क़रीब वाले ह़िस्से को ज़ख़्मी कर देते हैं और टीन के डिब्बे का मुंह चपटा कर के उस की नोक गधे के ज़ख़्म पर लगाते हैं कभी ज़ोर से मारते हैं और वोह बेचारा तक्लीफ़ और अज़िय्यत की वज्ह से उछल्ता और भागता है। इसी त़रह़ गधागाड़ियों की रेस के मौक़अ़ पर भी बहुत ज़ुल्म किया जाता है। नीज़ मैं ने बाज़ार में देखा है गधागाड़ी पर इतना बोझ लाद देते हैं कि बेचारा गधा ऊपर हो कर लटक जाता है अगर येह मन्ज़र कोई नर्म दिल वाला आदमी देख ले तो उस की आंखों में आंसू आ जाएं।

एक मरतबा क़ारी मुस्लिहुद्दीन रज़वी साहिब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने बयान में फ़रमा रहे थे कि मैं ने देखा कि एक गधागाड़ी में बहुत सारा माल लदा हुवा था जिस की वज्ह से बेचारा गधा ऊपर लटक गया था येह देख कर मेरी आंखों में आंसू आ गए थे। क़ारी साहिब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बहुत नर्म दिल आदमी थे और ऐसे लोग जब इस त़रह़ के मनाज़िर देखते हैं तो ग़म से रो पड़ते हैं। लेकिन अफ़्सोस है उन सफ़्फ़ाकों पर जो लम्हा लम्हा उन बे ज़बान व बेचारे जानवरों पर ज़ुल्म कर रहे होते हैं उन्हें बिल्कुल भी रह़्म नहीं आता। येह लोग याद रखें ! क़ियामत का दिन होगा और येह जानवर होंगे जो आप के किये गए ज़ुल्म का बदला लेंगे, येह क़ियामत के दिन बहुत महंगा पड़ेगा। आ़फ़ियत इसी में है कि आयिन्दा किसी भी जानदार पर ज़ुल्म करने से ख़ुद को बचा कर रखें चाहे गधा हो, घोड़ा हो, इन्सान हो या छोटी सी च्यूंटी हो किसी पर भी ज़ुल्म नहीं करना और अब तक जो किया है उस से तौबा कर लीजिये। अगर आप का गधा या घोड़ा अपनी गाड़ी तेज़ नहीं चला पा रहा तो उस को मारने के बजाए क़ियामत के इस मन्ज़र को पेशे नज़र रखिये कि क़ियामत वाले दिन पुल सिरात़ पर चलना होगा जिस पर क़दम रखना भी दुश्वार होगा लेकिन फिर भी बन्दे को मजबूरन क़दम रखना ही पड़ेगा, लोग कट कट कर जहन्नम में गिर रहे होंगे उस दिन आप को पुल सिरात़ लाज़िमी उ़बूर करना होगा उस दिन आप किस क़दर बेबस होंगे, जब येह तसव्वुर आप के पेशे नज़र होगा तो उम्मीद है आप अपनी सुवारी की मजबूरी या कमज़ोरी को समझ लेंगे।

या इलाही जब चलूं तारीक राहे पुल सिरात़ आफ़्ताबे हाशिमी नूरुल हुदा का साथ हो
या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े रब्बि सल्लिम कहने वाले ग़मज़ुदा का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 133)

याद रखिये ! ज़ुल्म क़ियामत वाले दिन का अंधेरा है, क़ियामत वाले दिन मज़्लूम का हाथ होगा और ज़ालिम का गिरेबान, क़ियामत वाले दिन मज़्लूम ज़ालिम से अपने ज़ुल्म का बदला ज़रूर लेगा, क़ियामत वाले दिन मज़्लूम काम्याब होगा और ज़ालिम नाकाम हो जाएगा क़ियामत वाले दिन फूं फां, अस्लहे की ताक़त, बॉडी बिल्डिग, मार्शल आर्ट या बड़े बड़े तअ़ल्लुक़ात किसी को भी काम नहीं आएंगे। समझदार वोही है जो अपने किये पर नादिम हो और जिन जिन लोगों का दिल दुखाया है या किसी भी तरह तंग किया है उन से मुआ़फ़ी मांग कर राज़ी कर ले वरना आख़िरत में येह मुआ़मला बड़ा महंगा पड़ जाएगा या'नी अपनी नेकियां देनी पड़ेंगी चाहे ह़ज किया हो नमाज़ें पढ़ी हों ख़ैरात की हो येह सब मज़्लूम ले जाएंगे और अगर नेकियां न हुईं या बांट बांट कर ख़त्म हो गईं और अब देने के लिये कुछ भी नहीं बचा तो मज़्लूमों के गुनाह अपने सर लेना पड़ेंगे ! या'नी बिलफ़र्ज़ ज़ालिम ने दुन्या में नेकियां की भी होंगी तो येह क़ियामत वाले दिन हाथ ख़ाली किये होगा और जहन्नम में डाल दिया जाएगा। ख़ुद को ज़ुल्म करने से महफ़ूज़ रखिये कि येह बहुत बड़ी बला है ह़त्ता कि इस की वज्ह से ईमान ज़ाएअ़ हो जाने का भी ख़त़रा होता है चुनान्चे "अल ह़ावी लिल फ़तावा" जिल्द 2 सफ़ह़ा नम्बर 138 पर है : ह़ज़रत इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "बुरे ख़ातिमे का सब से बड़ा सबब ज़ुल्म है।" **अल्लाह** करीम हम सब को ज़ुल्म से महफ़ूज़ फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

कबूतर और बिल्ली की दोस्ती

सुवाल : आप देख रहे हैं कि बिल्ली सोई हुई है और कबूतर उस को तंग कर रहा है, क्या जानवर भी दूसरे जानवर को तंग करते हैं ? (वीडियो दिखा कर सुवाल किया गया)

जवाब : इस वीडियो में बिल्ली कबूतर को नरमी से पकड़ रही है और उसे किसी क़िस्म का नुक़्सान नहीं पहुंचा रही, उस को अपने पन्जों से दबोचा भी है तो इतने आराम से कि कबूतर को कोई नाख़ुन न लगे और किसी क़िस्म की तक्लीफ़ न हो, इस के लिये बिल्ली ने अपनी उंग्लियां मोड़ ली हैं, और कबूतर को भी मा'लूम है कि येह है तो मुझ से काफ़ी ज़ियादा त़ाक़त वर मगर ह़ौसले वाली है इसी लिये कबूतर बहुत आराम से उस के पास है। इस से काफ़ी कुछ सीखने को मिला मसलन ❀ किसी भी सोते हुए को तंग नहीं करना चाहिये कि वोह इस से परेशान होता है। ❀ अगर कोई सोते हुए को तंग करे तो सोने वाला त़ाक़त वर होने के बा वुजूद दर गुज़र से काम ले। ❀ येह भी दर्स मिला कि अगर हम को कोई तंग करे या गाली दे, झाड़ झपट करे और हम भी उस को उसी त़रह़ झाड़ कर भगाएं तो हम इस जानवर से भी बुरे हुए। इन्सानों को समझना चाहिये कि छोटी छोटी बातें होती रहती हैं दर गुज़र करना चाहिये।

दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है

सुवाल : हम ने सुना है कि अगर कोई सींग वाली बकरी किसी बे सींग वाली बकरी को मारेगी तो क़ियामत के दिन उसे इस का बदला दिया जाएगा। तो अगर कोई जानवर किसी दूसरे जानवर के साथ भलाई करता है जैसा कि इस वीडियो में दिखाया गया है तो क्या इस का कोई अज्र दिया जाएगा ? (वीडियो दिखा कर किया गया सुवाल)

जवाब : बकरी तो बकरी है, अगर कोई च्यूंटी भी किसी दूसरी च्यूंटी पर ज़ुल्म करेगी तो उस से भी बदला लिया जाएगा। (مسند امام احمد، 3/289، حدیث:8764 ماخوذا) अलबत्ता अगर कोई जानवर दूसरे जानवर के साथ भलाई करता है तो उस

को इस का अज्र मिलने के बारे में कोई रिवायत पढ़ना मुझे याद नहीं है। जो वीडियो दिखाई गई है वोह **अल्लाह** की क़ुदरत का करिश्मा है कि एक बत़ख़ अपने मुंह के ज़रीए मछलियों को दाने खिला रही है, ह़ालां कि बत़ख़ मछलियों को खाती है और पानी पर तैरती भी है। इस से हम इन्सानों को येह दर्स मिलता है कि आज हम एक दूसरे के मुंह से निवाला छीन रहे हैं, चोरी, डकैती और क़त्लो ग़ारत गरी कर रहे हैं जब कि एक बे ज़बान जानवर दूसरे जानवर पर इतनी शफ़्क़त कर रहा है कि अपने मुंह से उस के मुंह में दाने डाल रहा है। इस ए'तिबार से इन्सान एक जानवर से भी गया गुज़रा हो गया। हमें **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानियों से बचना चाहिये और एक दूसरे के साथ हमदर्दी करनी चाहिये। ह़दीसे पाक में हमें ख़ैर ख़्वाही या'नी दूसरे की भलाई चाहने का दर्स दिया गया है। ''اَلدِّیْنُ النَّصِیْحَۃُ'' या'नी दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है। (مسلم، ص51، حدیث:196)

दूसरों का ख़याल रखिये

सुवाल : हुज़ूर ! येह देखिये ! एक मुर्ग़ा, मुर्ग़ी का ध्यान रख रहा है, लेकिन इन्सान दूसरे इन्सान का ख़याल नहीं करता, लोग मर रहे हैं, ज़रा लोगों को समझाइये ! (एक मन्ज़र दिखाया गया जिस में एक मुर्ग़ा बारिश के दौरान मुर्ग़ी के ऊपर अपना पर फैला कर उसे बारिश से बचाने की अपनी सी कोशिश कर रहा था और येह सुवाल किया गया।)

जवाब : क्या बात है ! येह वाक़ेई अनोखा मन्ज़र है। इस से हमें येह सीखने को मिलता है कि जब जानवर एक दूसरे के साथ हमदर्दी करते हैं तो हम इन्सानों को तो एक दूसरे के साथ ज़ियादा हमदर्दी करनी चाहिये। लेकिन अफ़्सोस ! इन्सानों की एक ता'दाद ऐसा नहीं करती। ख़ुद महफ़ूज़ हैं तो बस सब ठीक है। ''ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की बाज़ार में दुकान थी, एक

दफ़्आ उस बाज़ार में आग लग गई, पूरा बाज़ार जल गया, लेकिन आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की दुकान बच गई। जब आप को इस बात की ख़बर दी गई तो बे साख़्ता आप के मुंह से निकला : "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" मगर फ़ौरन ही अपने नफ़्स को मलामत करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "फ़क़त अपना माल बच जाने पर मैं ने कैसे اَلْحَمْدُ لِلّٰه कह दिया !" चुनान्चे आप ने तिजारत को ख़ैरबाद कह दिया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहने पर तौबा व मुआफ़ी की ख़ातिर उम्र भर के लिये दुकान छोड़ दी।" (احیاءالعلوم،5/71)

क्या शान है हमारे बुज़ुर्गों की ! येह था उन का ज़ेहन कि ख़ुद नुक़्सान से बच कर ख़ुश नहीं होना, बल्कि दूसरों के नुक़्सान का भी ख़याल रखना है। सैलाब आया हुवा है, दूसरों का माल डूब रहा है और हम अपने सामान के साथ बच कर निकल जाएं, नहीं ! ऐसा नहीं करना ! अगर कोई वायरस आया हुवा है और मैं उस वायरस से बच गया हूं तो मुझे उस वायरस के शिकार लोगों से हमदर्दी और ख़ैर ख़्वाही करनी है। ऐसा नहीं है कि कोई मुसल्मान दूसरे की ग़म ख़्वारी नहीं कर रहा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! एक ता'दाद है जो ग़म ख़्वारी कर रही है। **अल्लाह** करीम हम को भी ग़म ख़्वारी करने वालों में शामिल फ़रमाए।

खाल फुला लेने वाली मछली खाना कैसा ?

सुवाल : जो मछली अपनी खाल फुला लेती है क्या उसे खाना ह़लाल है ?

(मछली की वीडियो दिखा कर सुवाल किया गया जिस में एक आदमी मछली पकड़ कर उस को खुजा रहा है जिस से मछली की खाल फूलती जा रही है।)

जवाब : येह मछली ही है और जब मछली है तो इस का खाना भी ह़लाल है। हो सकता है जब इस पर कोई दुश्मन ह़म्ला आवर होता हो तो येह इस त़रह़ फूल कर ख़ुद को बचाती हो ताकि वोह इस को अपने मुंह में न ले

सके। इस वीडियो में एक शख़्स उस को हाथ से रगड़ रहा है जिस से शायद मछली पर घबराहट त़ारी हो रही है और उस ने ख़ुद को फुला लिया है, अगर वाक़ेई मछली को घबराहट हो रही है और वोह तक्लीफ़ महसूस कर रही है तो ऐसा करने की शर्अ़न इजाज़त नहीं है, येह शख़्स तौबा करे। याद रखिये ! किसी भी जानवर बल्कि किसी कीड़े को भी बिला वज्ह तक्लीफ़ देना जाइज़ नहीं है। (در مختار مع رد المحتار، 9/663)

छोटे बच्चे कीड़े मकोड़ों को कुचल रहे होते हैं या बिल्ली को उस की पूंछ से उठाते हैं और घुमा कर फेंक देते हैं उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिये, बड़ों को चाहिये कि वोह बच्चों को ऐसा न करने दें। जो जानवर ईज़ा नहीं देते उन्हें बिला वज्ह नहीं मारना चाहिये और जो जानवर ईज़ा देते हैं उन्हें मारने की इजाज़त है जैसे मच्छर वग़ैरा। अलबत्ता उन्हें भी मारें तो आसान से आसान मौत मारें ताकि कम से कम तक्लीफ़ हो, कुचल कुचल कर या थोड़ी थोड़ी तक्लीफ़ दे कर मारने की इजाज़त नहीं है।

ह़ज़रते इमाम इब्ने ह़जर हैतमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इन्सान ने नाह़क़ किसी चौपाए को मारा या उसे भूका प्यासा रखा या उस से त़ाक़त से ज़ियादा काम लिया तो क़ियामत के दिन उस से उसी की मिस्ल बदला लिया जाएगा जो उस ने जानवर पर ज़ुल्म किया या उसे भूका रखा। इस पर दर्जे ज़ैल ह़दीसे पाक दलालत करती है। चुनान्चे रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहन्नम में एक औ़रत को इस ह़ाल में देखा कि वोह लटकी हुई है और एक बिल्ली उस के चेहरे और सीने को नोच रही है और उसे वैसे ही अ़ज़ाब दे रही है जैसे उस (औ़रत) ने दुन्या में क़ैद कर के और भूका रख कर उसे तक्लीफ़ दी थी। (بخاری، 2/99، حدیث: 2364 مفہوما) इस रिवायत का हुक्म तमाम जानवरों के ह़क़ में आ़म है। (الزواجر، 2/174)

जानवरों की आपस में दोस्तियां

सुवाल : जानवर अगर जानवर पर जुल्म करे तो बरोज़े क़ियामत उस से जुल्म का बदला लिया जाएगा, भैंस के ऊपर आ़म तौ़र पर सुवारी नहीं की जाती जैसा कि वीडियो में देखा जा रहा है कि बकरी भैंस के ऊपर चढ़ कर पत्ते खा रही है तो क्या बकरी का इस त़रह़ भैंस के ऊपर चढ़ना जुल्म है और इस का बदला लिया जाएगा ? (वीडियो दिखा कर सुवाल किया गया)

जवाब : इस वीडियो में भैंस जिस त़रह़ सर झुकाए और कमर सीधी किये खड़ी है इसे देख कर येह नहीं लगता कि इस पर जुल्म हो रहा है बल्कि यूं लगता है कि भैंस ने बकरी के साथ तआ़वुन किया है कि मेरी कमर पर चढ़ कर दरख़्त से पत्ते खा लो। अगर इस पर जुल्म हो रहा होता तो येह उछल कूद करती और बकरी का भैंस से क्या मुक़ाबला होगा वोह तो बहुत जानदार होती है। बा'ज़ अवक़ात जानवरों की आपस में दोस्तियां हो जाती हैं जिस की हमें समझ नहीं पड़ती और वोह यूं एक दूसरे के साथ तआ़वुन भी करते हैं।

अल्लाह पाक का ज़िक्र करने वाला जानवर

सुवाल : सुना है मेंडक के ज़रीए फ़िरऔ़नियों को अ़ज़ाब दिया गया था तो क्या इस से पहले मेंडक रूए ज़मीन पर मौजूद नहीं थे ? (SMS के ज़रीए सुवाल)

जवाब : जब फ़िरऔ़नियों को अ़ज़ाब दिया गया था तो मेंडक ही मेंडक हो गए थे ह़त्ता कि खाने पीने और बैठने की जगहों पर भी मेंडक आ जाते थे जिस की वज्ह से येह लोग तंग आ गए थे। (حاشیۃ الصاوی، پ9، الاعراف، تحت الآیۃ:133، الجزء:2، 1/703 مفہوما) हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि मेंडकों को क़त्ल मत करो क्यूं कि जब येह उस आग के पास से गुज़रे जिस में ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام को डाला

गया था तो उन्हों ने अपने मुंह में पानी भर कर उस पे छिड़का था। (تفسیر روح البیان، پ19، النمل، تحت الآیۃ:16، 6/330) मेंडक के बारे में येह भी है कि येह कसरत से ज़िक्र करता है इस को मत मारो। (معجم اوسط، 3/12، حدیث:3716 ماخوذا) बारिश का पानी जम्अ़ होता है तो मेंडक ख़ुद ब ख़ुद पैदा हो जाते हैं इसी लिये एक कहावत भी है "बरसाती मेंडक" याद रहे! मेंडक खाना ह़राम है। (در مختار مع رد المحتار، کتاب الذبائح، 9/508)

कुत्तों की लड़ाई करवाना कैसा ?

सुवाल : कुत्तों की लड़ाई करवाना कैसा है ?

जवान : कुत्ते लड़ाना ना जाइज़ है (मिरआतुल मनाजीह़, 5/659) जो लोग कुत्ते लड़ाते हैं वोह इस से तौबा करें।

"या रसूलल्लाह आप पर जान कुरबान" के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से कुरबानी की खालें जम्अ़ करने वाले के लिये 22 निय्यतें और एह़तियातें

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (معجم کبیر، 6/185، حدیث:5942) ﴿2﴾ "अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।" (مسند الفردوس، 4/305، حدیث:6895) **दो मदनी फूल :** ﴿1﴾ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ﴿2﴾ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा। ﴿1﴾ रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें करता हूं ﴿2﴾ हर ह़ाल में शरीअ़तो सुन्नत का दामन थामे रहूंगा ﴿3﴾ कुरबानी की खालों के लिये भागदौड़ के ज़रीए दा'वते इस्लामी के साथ तआ़वुन करूंगा ﴿4﴾ कोई लाख बद सुलूकी करे मगर इज़्हारे गुस्सा और ﴿5﴾ बद अख़्लाक़ी से परहेज़ कर

के दा'वते इस्लामी की नामूस व इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त करूंगा ﴾6﴿ क़ुरबानी की खालों के सबब लाख मसरूफ़िय्यत हुई बिला उ़ज़्रे शरई किसी भी नमाज़ की जमाअ़त तो क्या तक्बीरे ऊला भी तर्क नहीं करूंगा ﴾7﴿ पाक लिबास मअ़ इ़मामा शरीफ़ और तहबन्द शॉपर वग़ैरा में डाल कर नमाज़ों के लिये साथ रखूंगा (ह़स्बे ज़रूरत बस्ते वग़ैरा पर भी रख सकते हैं। इस की ख़ास ताकीद है, क्यूं कि ज़ब्ह़ के वक़्त निकला हुवा ख़ून नजासते ग़लीज़ा और पेशाब की त़रह़ नापाक है और खालें जम्अ़ करने वाले का अपने कपड़े पाक रखना इन्तिहाई दुश्वार है। बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 389 पर है : "नजासते ग़लीज़ा का हुक्म येह है कि अगर कपड़े या बदन में एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो उस का पाक करना फ़र्ज़ है, बे पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो होगी ही नहीं और क़स्दन पढ़ी तो गुनाह भी हुवा और अगर ब निय्यते इस्तिख़्फ़ाफ़ (या'नी इस हुक्मे शरीअ़त को हलका जान कर) है तो कुफ़्र हुवा और अगर दिरहम के बराबर है तो पाक करना वाजिब है कि बे पाक किये नमाज़ पढ़ी तो मक्रूहे तह़रीमी हुई या'नी ऐसी नमाज़ का इआ़दा वाजिब हुवा और क़स्दन पढ़ी तो गुनहगार भी हुवा और अगर दिरहम से कम है तो पाक करना सुन्नत है कि बे पाक किये नमाज़ हो गई मगर ख़िलाफ़े सुन्नत हुई और इस का इआ़दा बेहतर है।") ﴾8﴿ मस्जिद, घर, मक्तब और मद्रसे वग़ैरा की दरियों, चटाइयों, कारपेट और दीगर चीज़ें ख़ून आलूद होने से बचाऊंगा (वुज़ू ख़ाने के गीले फ़र्श या पाएदान वग़ैरा पर भी ख़ून आलूद पाउं समेत जाने से बचने और वुज़ू करते हुए ख़ूब एह़तियात़ करने की ज़रूरत है वरना नजासत की आलूदगी और नापाक पानी के छींटों से अपने साथ दूसरों को भी नापाक कर डालने का एह़तिमाल रहेगा) ﴾9﴿ ख़ून आलूद बदबूदार कपड़ों समेत मस्जिद में नहीं जाऊंगा (बदबू न भी आती हो तब भी नापाक बदन या कपड़ा या चीज़ मस्जिद में ले

जाना मन्अ़ है। ज़ख़्म, फोड़े, कपड़े, इमामे चादर , बदन या हाथ मुंह वग़ैरा से बदबू आती हो तो तब भी मस्जिद के अन्दर दाख़िल होना ह़राम है। फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल सफ़ह़ा नीचे से 1217 पर है : मस्जिद को (बद)बू से बचाना वाजिब है व लिहाज़ा मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाना ह़राम, मस्जिद में दिया सलाई (या'नी माचिस की तीली) सुलगाना ह़राम, ह़त्ता कि ह़दीस में इर्शाद हुवा : मस्जिद में कच्चा गोश्त ले जाना जाइज़ नहीं। (ابن ماجہ، 1/413، حدیث:748) ह़ालां कि कच्चे गोश्त की (बद)बू बहुत ख़फ़ीफ़ (या'नी हलकी) है) ﴾10﴿ क़लम, रसीद बुक, पेड, गिलास, चाय के पियाले वग़ैरा पाक चीज़ों को नापाक ख़ून नहीं लगने दूंगा (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 4, सफ़ह़ा 585 पर है : "पाक चीज़ को (बिला इजाज़ते शर्ई) नापाक करना ह़राम है।") ﴾11﴿ जो दूसरे इदारे को खाल देने का वा'दा कर चुका होगा उस को बद अ़ह्दी का मश्वरा नहीं दूंगा (आसान त़रीक़ा येह है कि अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ आप सारा ही साल मुतवज्जेह रहिये और ख़ुद ही पहल कर के खाल बुक करवा कर रखिये) ﴾12﴿ अपनी तै़ शुदा खाल अगर किसी सुन्नी इदारे का आदमी लेने नहीं पहुंचा, या ﴾13﴿ ग़लती से मेरे पास आ गई तो ब निय्यते सवाब उधर दे आऊंगा ﴾14﴿ जो खाल देगा हो सका तो उस को मक्तबतुल मदीना का कोई रिसाला या पेम्फ़लेट तोह़फ़तन पेश करूंगा ﴾15﴿ नीज़ उस को "शुक्रिय्या, جَزَاکَ اللّٰہ" कहूंगा (**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : مَنْ لَّمْ یَشْکُرِ النَّاسَ لَمْ یَشْکُرِ اللّٰہَ या'नी जिस ने लोगों का शुक्रिय्या अदा न किया उस ने **अल्लाह** पाक का भी शुक्र अदा न किया। ((ترمذی، 3/384، حدیث:1962)) ﴾16﴿ खाल देने वाले पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के उस को सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और ﴾17﴿ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा ﴾18﴿ बा'द में भी उस से राबित़ा रख कर खाल देने

के एहसान के बदले में उसे दीनी माहोल में लाने की कोशिश करूंगा अगर ﴾19﴿ वोह मदनी माहोल में हुवा तो उसे मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर या ﴾20﴿ नेक आ'माल का आमिल बनाऊंगा या ﴾21﴿ कोई न कोई मज़ीद कोशिश करूंगा। (ज़िम्मेदारान को चाहिये कि बा'द में वक़्त निकाल कर खाल देने वालों का शुक्रिय्या अदा करने ज़रूर जाएं नीज़ उन सब मोहसिनीन को अलाक़ाई सत्ह पर या जिस तरह मुनासिब हो इकठ्ठा कर के मुख़्तसरन नेकी की दा'वत और लंगरे रसाइल वग़ैरा तक़्सीम फ़रमाएं। रसाइल की दा'वते इस्लामी के चन्दे से नहीं जुदागाना तरकीब करनी होगी) ﴾22﴿ दूर व नज़्दीक जहां से भी खाल उठाने (या बस्ता या कोई सा काम संभालने) का ज़िम्मेदार इस्लामी भाई हुक्म फ़रमाएंगे, बिला रद्दो कद इताअत करूंगा। (येह निय्यतें बहुत कम हैं, इल्मे निय्यत से आशना मज़ीद बहुत सारी निय्यतें निकाल सकता है)

फ़ेहरिस

जानवरों के बारे में दिलचस्प सुवाल जवाब	1	जान का सदक़ा किस चीज़ से दिया जाए ?	7
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	जानवरों पर ज़ुल्म करना आज़्माइश का बाइस बन सकता है !	8
शैख़ उस्मान हीरी और ज़ख़्मी गधा (हिकायत)	2		
जानवर की मदद करने पर अज्र	2	कबूतर और बिल्ली की दोस्ती	10
क्या बकरियां पालना सुन्नत है ?	3	दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है	11
जानवर बेच कर मीलाद का लंगर करना कैसा ?	3	दूसरों का ख़याल रखिये	12
क्या भूलना भी **अल्लाह** की ने'मत है ?	4	खाल फुला लेने वाली मछली खाना कैसा ?	13
हराम जानवर का नाम लेने से 40 दिन तक नमाज़ क़बूल नहीं होती ?	5	जानवरों की आपस में दोस्तियां	15
		अल्लाह पाक का ज़िक्र करने वाला जानवर	15
पिंजरों में तोते पालना कैसा ?	6	कुत्तों की लड़ाई करवाना कैसा ?	16
बच्चा पैदा होते ही बेच देना कैसा ?	6	कुरबानी की खालें जम्अ करने की 22 निय्यतें और एहतियातें	16

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ۔ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔

एक अहम शरई मस्अला

हमेशा क़ुरबानी की खालें और नफ़्ली अ़तिय्यात "कुल्ली इख़्तियारात" या'नी किसी भी नेक और जाइज़ काम में ख़र्च कर लिये जाएं इस निय्यत से इनायत फ़रमाया करें क्यूं कि अगर मख़्सूस कर के दिया मसलन कहा कि : "येह दा'वते इस्लामी के मद्रसे के लिये है" तो अब मस्जिद या किसी और मद (या'नी उ़न्वान) में उस का इस्ति'माल करना गुनाह हो जाएगा। लेने वाले को भी चाहिये कि अगर किसी मख़्सूस काम के लिये भी चन्दा ले तो एह़तियात़न कह दिया करे कि हमारे यहां मसलन दा'वते इस्लामी में और भी दीनी काम होते हैं, आप हमें "कुल्ली इख़्तियारात" दे दीजिये ताकि येह रक़म दा'वते इस्लामी जहां मुनासिब समझे वहां नेक और जाइज़ काम में ख़र्च करे। याद रहे! चन्दा देने वाला "हां" करे और वोह चन्दे या खाल वग़ैरा का अस्ल मालिक हो तो ही "इजाज़त" मानी जाएगी। लिहाज़ा चन्दा या खाल पेश करने वाले से पूछ लिया जाए कि येह किस की त़रफ़ से है अगर किसी और का नाम बताए तो अब इस का "हां" करना मुफ़ीद न होगा अस्ल मालिक से फ़ोन वग़ैरा के ज़रीए राबित़ा करे।

(ज़कात और फ़ित़रा देने वाले से कुल्ली इख़्तियारात लेने की हाजत नहीं क्यूं कि येह "शरई हीले" के ज़रीए इस्ति'माल किये जाते हैं)

978-969-722-191-2
01082202

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net